Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed & Open Access) **Journal home page:** www.researchambition.com
ISSN: 2456-0146, Vol. 08, Issue-IV, Feb. 2024

पातालकोट छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश) की भारिया जनजाति की लोक प्रथाएं एवं त्यौहार

Folk Practices and Festivals of Bharia Tribe of Patalkot Chhindwara (Madhya Pradesh)

Dr. Gauri Shankar Mahapatra[a,*] **Dr. Kumkum Kasturi**[b,] **Dr. Sanjay Yadav**[c,] **Vikash Mahara**[d,] **Lavkesh Singh**[e,]

[a]*Associate Professor, Dept. of Tribal Studies, Art, Culture & Folk Literature, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, Madhya Pradesh (India).*

[b]*Assistant Professor, Dept. of Tribal Studies, Art, Culture & Folk Literature, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, Madhya Pradesh (India).*

[c] *Assistant Professor, Dept. of Tribal Studies, Art, Culture & Folk Literature, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, Madhya Pradesh (India)).*

[d] *Research Assistant, ICSSR Project, Dept. of Tribal Studies, Art, Culture & Folk Literature, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, Madhya Pradesh (India)).*

[e] *Field Investigator, ICSSR Project, Dept. of Tribal Studies, Art, Culture & Folk Literature, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, Madhya Pradesh (India)*

KEYWORDS

भारिया, पातालकोट, लोक नृत्य, लोकगीत, त्यौहार

ABSTRACT

भारत इस जगत मे एक ऐसा देश है जहाँ पर ना–ना प्रकार की बोलियाँ बोली जाती है, जहाँ पर अनेको प्रकार के धर्म स्थित है, अनेको प्रकार की जाति स्थित है, जहाँ पर अनेक प्रकार की जनजातियां स्थित है उन्हीं में से एक है पतलकोट के अंतर्गत दुर्गम पहाड़ियों के बींच लगभग 3000 फ़ीट नीचे धरातल मे अपना जीवन निर्वहन करने वाली भारिया जनजाति जो की गोंड समाज की एक उपजाती के रूप मे जानी जाती है, जो कि अपनी लोक परंपराओ एवं अपने त्यौहारो के लिए विशिष्ट रूप से संस्कारबद्ध है। आज भी पातालकोट में निवास करने वाली सम्पूर्ण भारिया जनजाति अपने लोक नृत्यों, लोक गीतों और त्यौहारों से गहरा जुड़ाव रखती है और किसी भी परिस्थिति में यह जनजाति अपने आपको अपनी परंपराओं या त्यौहारों से अलग नहीं मानती है। कुछ कारणों से वर्तमान में भारिया समुदाय हिंदू सामाजिक परंपराओं से विशेष रूप से जुड़ गया है, जो कि इस समुदाय की दैनिक गतिविधियों में देखा जा सकता है और उन्होंने हिंदुओं द्वारा पूजे जाने वाले देवी–देवताओं का भी अनुसरण करना शुरू कर दिया है, जिसके कारण उनके त्यौहारों और लोक परंपराओं में हिंदू समाज की छाया देखी जा सकती है। पातालकोट में निवास करने वाला भारिया समुदाय भी स्वयं को हिन्दू कहता है, तथा भगवान शंकर (भोलेनाथ) को अपना इष्टदेव मानता है।

परिचय

भारिया जनजाति जो मुख्य रूप से मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले की तामिया तहसील के अंतर्गत पातालकोट में निवास करती है। पातालकोट से जिला मुख्यालय की दूरी लगभग 75–80 किलोमीटर है जबकि तामिया से इसकी दूरी 25 किलोमीटर है। पातालकोट पहुंचने का एकमात्र रास्ता सड़क मार्ग है। पातालकोट का अर्थ इसके नाम में ही छिपा है। प्राचीन समय में

Corresponding author
***E-mail:** dgsm.mus@gmail.com (Dr. Gauri Shankar Mahapatra). https://orcid.org/0000-0002-5984-7631
DOI: https://doi.org/10.53724/ambition/v8n4.10
Received 20th Nov. 2023; Accepted 30th Jan. 2024
Available online 28th Feb. 2024
2456-0146 /© 2024 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

लोग मानते थे कि पातालकोट ही पाताल लोक जाने का एकमात्र रास्ता है। पातालकोट सतपुड़ा की ऊंची पहाड़ियों और जंगलों से घिरा हुआ है और इस विशाल घाटी की सतह लगभग 3000 फीट नीचे है, पातालकोट में 12 गांव हैं, जिनमें 2011 की जनगणना के अनुसार उनकी आबादी लगभग 3835 है।

मध्य प्रदेश राज्य में कई भारिया आदिवासी समुदाय रहते हैं। इनका मुख्य जमावड़ा छिदवाड़ा जिले के पातालकोट घाटी में है। इसके अलावा, जबलपुर जिले और राज्य के आस–पास के इलाकों में भी भारिया जनजाति के लोग रहते हैं। पातालकोट घाटी एक प्राकृतिक आश्चर्य है, जो खूबसूरत पहाड़ियों से घिरी हुई है। इस घाटी से होकर दूधी नदी बहती है। इस घाटी में 12 गांव और 13 बस्तियां बसी हैं और खास तौर पर बारिश के मौसम में इसकी खूबसूरती देखते ही बनती है, इसलिए इसे एक आकर्षक पर्यटन स्थल के तौर पर भी पहचाना जाता है।

भारिया जनजाति एक द्रविड़ जनजाति है। इन्हें भारतीय उपमहाद्वीप की अनुसूचित जनजातियों में से एक होने का दर्जा दिया गया है। भूमिया नाम जिसका अर्थ है मिट्टी का भगवान इस आदिवासी समूह का दूसरा नाम है। भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ आदिवासी समुदाय भारिया जनजाति को भारिया/ भूमिया के नाम से भी पहचानते हैं।

भारिया जनजाति अपने नृत्य और लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध है जिनमें उनकी सांस्कृतिक विविधता पूरी तरह झलकती है। इन सांस्कृतिक गतिविधियों में युवा भी हमेशा बड़ी संख्या में शामिल होते हैं। वे आगामी पीढ़ियों को इन सांस्कृतिक परंपराओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। भारिया जनजाति की लोक परंपरा में लोकगीत, लोकनृत्य और उनके वाद्य यंत्रों का बहुत महत्व है। भारिया विभिन्न त्योहारों और खुशी के मौकों पर गाते और नाचते हैं। नाचना–गाना उनकी परंपरा में मौजूद है। इस जनजाति के लोग नृत्य और गीतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

लोकनृत्य

भड़म नृत्य

यह भारिया जनजाति का एक प्रमुख और लोकप्रिय नृत्य है जिसे भड़नोई, भरनोती और भागम नृत्य के नाम से भी जाना जाता है। यह विवाह के समय किया जाता है जिसमें लगभग 40 से 50 लोगों का समूह होता है जो ढोल और टिमकी का उपयोग करके नृत्य और गायन करते हैं और कुछ लोग लकड़ी की छड़ियों के साथ भी नृत्य करते हैं। जैसे–जैसे नृत्य आगे बढ़ता है ढोल की ध्वनि और तीव्रता बढ़ती जाती है, भारिया जनजाति के लोग बीच–बीच में आराम करके पूरी रात यह नृत्य करते हैं। भारिया द्वारा उपयोग किए जाने वाले ढोल आकार में बड़े होते हैं जिन्हें वे खोखली लकड़ी और चमड़े का उपयोग करके अपना बनाते हैं, उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली टिमकी एक लकड़ी का कटोरा जैसा वाद्य यंत्र होता है जो चमड़े से ढका हुआ एक गोलाकार प्लेट होता है।

साटम नृत्य

साटम भारिया जनजाति का एक महिला नृत्य है जिसमें पुरुष ढोल वादक घेरे के बीच में होता है। महिलाओं के दो समूह होते हैं। किशोरवय लड़कियों का रुझान इस नृत्य के प्रति अधिक होता है। युवतियों के हाथों में मंजीरा या मिंगल होता है, ढोल की ताल पर गीत बजता है।

डंडा नृत्य

यह भारिया लोगों का मुख्य नृत्य है। यह नृत्य फसल कटने के बाद माघ–पौष के महीने में किया जाता है। मुख्य वाद्य यंत्र मादर और मृदंग हैं। नर्तकों के हाथ में लाठी होती है। नर्तकों की संख्या 16 से 20 तक होती है। डंडा नृत्य में डंडा गीत गाए जाते हैं। वर्तमान में इस

नृत्य की लोकप्रियता कम होती जा रही है। यह भी पुरुष प्रधान नृत्य है।

सुआ नृत्य

यह महिलाओं का मुख्य नृत्य है। इस नृत्य में कोई वाद्य यंत्र नहीं होता। नृत्य में महिलाएँ दो पंक्तियों में नृत्य करती हैं, बीच में सुवासिन होती है, जिसके सिर पर धान की बालियाँ, आम के पत्ते और जलते हुए दीपक से सजा मिट्टी का घड़ा होता है। सुआसिन सुआ गीत गाकर नृत्य शुरू करती है। पंक्तिबद्ध महिलाएँ एक–एक करके गीत दोहराती हैं और ताली बजाकर ताल पर नृत्य करती हैं।

बार नृत्य

यह नृत्य भारिया जनजाति का समूह नृत्य है। यह नृत्य माघ पौष माह में 12 दिनों तक किया जाता है। इस नृत्य में पुरुष, महिलाएँ और बच्चे सभी भाग लेते हैं। प्रमुख वाद्य ढोल, नगाड़ा, झांझ, हिरकी, मोहरी, निशान, डफली हैं। बीच–बीच में वादक नृत्य रोककर भरनी वाद्य बजाते हैं।

करमा नृत्य

भादों माह में भारिया जनजाति अन्य आदिवासी जातियों जैसे गोंड और अन्य ग्रामीण भाइयों के साथ मिलकर यह नृत्य करती है। इस नृत्य में करमसेन की पूजा की जाती है। आंगन के बीच में करमी की कब्र गाड़ दी जाती है। नर्तक उसके चारों ओर नृत्य करते हैं। यह महिलाओं और पुरुषों का नृत्य है। मादर मुख्य वाद्य यंत्र है।

डिडवा नृत्य

इसे मिडुआ नृत्य भी कहा जाता है। यह नृत्य बारात के विदा होने पर दूल्हे के आंगन में मंडप के नीचे महिलाओं द्वारा किया जाता है। महिलाएं पुरुषों की वेशभूषा में होती हैं। महिलाएं नकली मूंछें और दाढ़ियां लगाकर नृत्य करती हैं। वे अपने हाथों में सूप में कंकड़ और टाइल के टुकड़े डालकर आवाजें निकालती हैं। बीच–बीच में राख फेंकती हैं। इस नृत्य में अश्लील शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नृत्य के बीच–बीच में दोहे सुनाए जाते हैं।

लोक – गीत

डंडा गीत

कौन बन निकल चले दुनो भाई जी, कों बन निकल चले।

आगे तो आगे भैया राम जी चलत हैं

पीछे मे लछमन भाई जी।

मांझे मंझोलन सिया जानकी।

चित्रकूट बर जाई

भावार्थ : भगवान श्रीरामचंद्र जी, श्री लक्ष्मणजी एवं मॉ सीता जानकी किस जंगल की ओर निकले है, पुनः इस गीत में चित्रकुट जंगल की ओर तीनों की निकलने की जानकारी उदघृत है।

सुआ गीत

कोन खोली जाथे मोर लहँगा ना रे सुआ ना। कोन खोली जाथे बीरावान।।

राजा खोली जाथे लहेंगा सुपाड़ी ना रे सुआ ना। रानी खोली जाथे बीरावान।।

भावार्थ :– कौन किस गली में लहंगा, सुपाड़ी एवं बीरापान लेकर जा रहा है

प्रति उत्तर में लहंगा, सुपाड़ी को राजा गलीं एवं, बीरापान को रानी की गली को जाने की जानकारी मिलती है। यह प्रश्न एक तोता दुसरे तोता से करता है एवं दुसरा तोता उसका जवाब देता है।

करमा गीत

हरे हरे रेहरे हरे रेः अलबेला मोर तिरछी नजरिया भवां के मारे।

ये भवा के मारे रे अलबेला मोर तिरछी नजरिया भवां के मारे।।

भावार्थ :– महिला एवं पुरुष अपने प्रिय प्रियतम से एक दूसरे पर ताना मारते हुए तिरछी निगाह से क्यों देख रहे हो इस गानें के माध्यम से व्यक्त करते है।

बिहाव गीत

दरबर दरबर आया बरतिया कोठा में ओलिहाया हों।
कोठा के तो किरनी चाबीस खपरा म खजआया हों।।
नदिया तीर के पटुआ भाजी पट पट करत है।
ये गावन के दुरिया मन मट मट मट करत है।।

भावार्थ :– कन्या पक्ष की सुआसिनें अपनी महिला समूहों के साथ बारातियों को वर पक्ष वालों को मवेशियों की तरह भीड़ बढ़ाकर बारात आने एवं कोठे में घुस जाने का ताना देती है, कोठा की किरनी जब काटेगी तो खपरैल के टुकड़े से खुजलाने की सलाह देती है।

बार गीत

हाथ मोर दझ्या गे रामे तो भइया।
तोला ये मया नही लागे।।
पऊर के सुरता एसो ले लमाए।
तो ए मया नही लागे।।

भावार्थ :– इस गीत के माध्यम से प्रेमी प्रेमिकाएं एक दूसरे को प्रेम की पीड़ा न भूल जाने की याद दिलाते हैं। कहते है इस वर्ष के प्रेम की याद अगले वर्ष तक रखना।

त्यौहार (तियार)

किसी भी अनुष्ठान, या त्यौहार का अर्थ उत्सव धर्मिता है। आनंद में खो जाना, आनंद में डूब जाना। ऋतुओं के दौरान, बारह महीनों में, वे कई पूजाएँ, कई त्यौहार और कई उत्सव मनाते हैं। कोई भी त्यौहार या उत्सव उनके लिए बोझ नहीं है। कोई भी त्यौहार उनके लिए किसी भी तरह की जलन या खीझ पैदा नहीं करता है। वे अपने त्योहारों, अपने अनुष्ठानों और समारोहों में हँसते हैं। आइए पातालकोट के भारिया जनजातियों द्वारा मनाए जाने वाले कुछ त्यौहारों के बारे में चर्चा करें।

शिवरात्रि

भारिया जनजाति में शिवरात्रि का बहुत महत्व है। पातालकोट के भारिया लोग भी इस दिन पचमढ़ी स्थित चौरागढ़ महादेव या तामिया के छोटा महादेव के दर्शन करते हैं। वे पचमढ़ी के महादेव मेले में बड़ी भक्तिभाव से भाग लेते हैं। अगर किसी भारिया परिवार की कोई मनोकामना पूरी हो जाती है तो वे इस दिन महादेव को त्रिशूल भी चढ़ाते हैं। इस दिन भारिया लोग व्रत भी रखते हैं।

बिदरी पूजा

बिदरी पूजा आकाश और बीज की पूजा का पर्व है। यह पूजा ग्रामीणों द्वारा बैसाख जेठ के महीने में मनाई जाती है। बिदरी पूजा की जानकारी एक दिन पहले गांव में दे दी जाती है। गांव का हर किसान ठाकुर देव स्थल पर बीज रखकर इकट्ठा होता है। पूजा में बकरे की बलि दी जाती है। इसके बाद किसानों द्वारा लाए गए बीजों का जाप किया जाता है और कुछ बीज देव स्थल पर बो दिए जाते हैं। बचे हुए बीजों को किसान अपने घर वापस ले आते हैं। खेतों में इन बीजों को बोते समय इन्हें दूसरे बीजों के साथ मिला दिया जाता है। भारिया लोगों का मानना है कि बिदरी के जाप किए गए बीजों से फसल अच्छी होती है। बिदरी की पूजा भीमसेन मुथ्वादेव दुल्हादेव और कई देवी–देवताओं के नाम से की जाती है।

हरियाली (हरेली)

यह पर्व श्रावण मास की अमावस्या को मनाया जाता है। इस दिन नागर, कोपर, कुदाल, रम्पा आदि कृषि औजारों को साफ पानी से धोकर एक कमरे में रख दिया जाता है। चावल और आटे को पानी में मिलाकर प्रत्येक औजार पर लगाया जाता है और चंदन लगाया जाता है। दीपक जलाकर पूजा करने के बाद नारियल तोड़ा जाता है, धूपबत्ती चढ़ाई जाती है। उसके बाद खेतों के बीच में हरी टहनी खोदकर उसे हल्दी के पानी से सींचने की परंपरा है। पशुपालक हरी टहनी को छत पर बांधता है और उसे कुछ अनाज और पैसे उपहार स्वरूप दिए जाते हैं।

तीजा

यह त्यौहार भादो महीने की तीज को मनाया जाता है। इसे हरितालिका व्रत भी कहते हैं। इस त्यौहार में भगवान शंकर और माता पार्वती की पूजा की जाती है। विवाहित महिलाएं पूरे दिन निर्जला व्रत रखती हैं और अपने पति की सलामती की कामना करती हैं। तरह–तरह के व्यंजन बनाकर प्रसाद के रूप में चढ़ाए जाते हैं।

नवाखानी

यह प्राथमिक फसलों की पूजा का पर्व है। यह त्यौहार प्रत्येक परिवार में व्यक्तिगत रूप से मनाया जाता है। यह त्यौहार क्वार माह के किसी भी शुभ दिन मनाया जाता है। नये अनाज से बने पकवान को सबसे पहले देवी–देवताओं को और फिर पितरों को अर्पित किया जाता है। नारियल फोड़ा जाता है और दीपक व धूप जलाकर पूजा की जाती है। इसके बाद परिवार का हर सदस्य नए–नए पकवानों का सेवन करता है। नवाखानी से पहले भारिया लोग अपने घरों की पुताई करते हैं।

जवारे

यह त्यौहार क्वार और चौत्र माह में नवरात्रि के त्यौहार पर मनाया जाता है। नौ दिनों तक गेहूँ के ज्वारे की पूजा की जाती है। इस त्यौहार में माँ दुर्गा के नव स्वरूपों की पूजा की जाती है। अंतिम दिन गाजे–बाजे के साथ जुलूस निकालकर तालाब में जवारे विसर्जित किए जाते हैं। इस त्यौहार में जसगीत, नवरात्रि के गीत गाए जाते हैं। पहले भारिया समुदाय द्वारा जवारा उत्सव नहीं मनाया जाता था, लेकिन अब वे भी इसे मनाने लगे हैं।

अखाड़ी

आषाढ़ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को भारिया लोगों में अखाड़ी का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन भारिया लोग अपने गांव में स्थापित देवताओं मुठवा, भीमसेन की पूजा करते हैं और उन्हें यथाशक्ति प्रसाद आदि चढ़ाते हैं। इस दिन भारिया घरों में पूरी, चावल, मिठाई आदि बनाई जाती है। यह त्यौहार भारिया लोगों में अपने पालतू पशुओं की सुरक्षा के लिए मनाया जाता है। वे देवताओं से उनकी रक्षा करने की प्रार्थना करते हैं। इस दिन पशुओं को बघनखा, भुई कुम्हड़ा, सेमल आदि खिलाया जाता है। भारिया लोग इन सभी वस्तुओं को पहले 5–7 दिनों तक पानी में रखकर गलाते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से वे बारिश के बाद उगने वाली नई घास को पचा सकेंगे और उन्हें कोई बीमारी नहीं होगी। पूजा की सुबह भारिया पुरुष अपने नियमित काम पर निकल जाते हैं। इधर गृहणियां घर की साफ–सफाई और लीपापोती करती हैं। स्नान करने के बाद वे उरवल में अनाज कूटती हैं और अखाड़ी पूजा के लिए चक्की में भी पीसती हैं। दोपहर में पुरुष अपने काम से लौटकर स्नान करते हैं और फिर अपने परिवार के साथ पूजा के लिए निकल जाते हैं। वे अखाड़ी पूजा के लिए देवता के स्थान पर जाते हैं। महिलाएं पहले वहां गोबर से चबूतरा लीपती हैं। फिर घर का मुखिया वहां कुछ चावल रखता है। उस पर सिंदूर, सुपारी, खारिक, नारियल आदि चढ़ाते हैं। इस दिन इसी स्थान पर मुर्गे को मोटा किया जाता है और उसका खून भी देवता को चढ़ाया जाता है। वह देवताओं से प्रार्थना करता है कि आपका आशीर्वाद उस पर बना रहे।

जीवती

भारिया लोग श्रावण मास में जीवती नामक त्यौहार मनाते हैं। जीवती के दिन वे भीमसेन को नारियल चढ़ाते हैं और पूजा–अर्चना करते हैं। इस दिन भारिया लोग व्रत भी रखते हैं। सुबह घर को साफ करके गोबर से लीपते हैं। दोपहर में परिवार जीवती की पूजा करता है। इस दिन देवताओं को मिठाई, पूड़ी, प्रसाद आदि का भोग लगाया जाता है। देवताओं के सामने अनाज के ढेर पर सिंदूर लगाया जाता है। कुछ गांवों में भारिया लोग मुर्गे की बलि देते हैं। इसके बाद पूरे परिवार को भोजन के

साथ–साथ पत्तल में बलि का प्रसाद परोसा जाता है।

नाग पंचमी

भादों की पंचमी तिथि को नाग पंचमी का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन भारिया लोग हल आदि का प्रयोग नहीं करते। वे खेती का काम नहीं करते तथा सांप के बिल के पास दूध आदि चढ़ाकर पूजा करते हैं।

पोला

भादों महीने की अमावस्या को भारिया लोग यह त्यौहार मनाते हैं। इस दिन बैलों को सजाकर उनकी पूजा की जाती है। इस दिन घर तथा गांव के सभी देवी–देवताओं की पूजा भी की जाती है। पोला त्यौहार के दौरान लड़के–लड़कियां पूरे दिन गीत गाते हैं। इन गीतों में गायकों के दो समूहों के बीच प्रतिस्पर्धा होती है। आज लड़के बांस की गाड़ी पर यात्रा करते हैं जिसे जेडी कहते हैं। इस गाड़ी की पूजा की जाती है, जिसके बाद इसे मेढ़ो देव तथा मलखानी माता के स्थान पर बांध दिया जाता है। इस दिन गांव की लड़कियां मिलकर मढिया गाड़ती हैं। पुरुष उस मढिया को उखाड़ते हैं। इस दिन पुरुषों के दांतों की मजबूती के लिए अक्सर एक विशेष करतब का आयोजन भी किया जाता है। पीतल की घुंडी को हाथों का उपयोग किए बिना अपने दांतों से उठाना होता है। घरों में खाने के लिए मिठाई और दाल, चावल, पूरी आदि बनाई जाती है।

दशहरा

इस त्यौहार में भारिया लोग अपने–अपने खेतों से अपनी फसलों के फूल और फल लाकर अपने गांव में मुठवा बाबा के स्थान पर लाते हैं और भुमका से पूजा करते हैं। इस पूजा को रेल कुची पूजा भी कहते हैं। उसके बाद गांव के देवता खास तौर पर खेड़ापति और पंडरी माता की पूजा की जाती है। दशहरे के बाद भारिया नई फसल काटते हैं। दशहरे के दिन भारिया अपने–अपने घरों के देवी–देवताओं की पूजा भी करते हैं। वे इस पूजा को नव आठे पूजा कहते हैं। भारिया मानते हैं कि जब तक नव आठे पूजा नहीं हो जाती, तब तक नए और पुराने अनाज को मिलाकर खाना बनाना वर्जित है। अगर कोई ऐसा करता है तो उसे कुछ न कुछ नुकसान झेलना पड़ता है। भारिया लोग इस दिन नीलकंठ पक्षी के दर्शन को शुभ मानते हैं।

दीपावली

कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या को दिवाली मनाई जाती है। इस दिन और रात में घर के दरवाजे पर, हर कमरे आदि में देवी–देवताओं के पास गुल्ली यानी महुआ के बीज के तेल से भरा मिट्टी का दीया जलाया जाता है। फिर घर में लक्ष्मी पूजा की जाती है। बच्चे पटाखे फोड़ते हैं। पूजा के दौरान लाई, मुर्रा (फूला हुआ चावल) और इलायची दाने (मिठाई) बांटे जाते हैं। दूसरे दिन यानी प्रतिपदा को सुबह चौरा बांधा जाता है। इसमें ऊपर की ओर तीन शाखाओं में लंबी माहुल की लकड़ी पर कपड़े और घंटी बांधी जाती है और फिर घर–घर जाकर उससे कोठा मारा जाता है। इसे गौ जागरण भी कहते हैं। इसी दिन शाम को पूरी, चावल, दाल और गुड़ मिलाकर खिचड़ी बनाई जाती है। सबसे पहले पालतू पशुओं के पैर धोकर उनके माथे पर गुलाल लगाकर उन्हें खिचड़ी खिलाई जाती है। तीसरे दिन सुबह गाय, बछड़े आदि को गांव से बाहर ले जाया जाता है। वहां बछड़े को पकड़कर गिरा दिया जाता है, जिसे देखकर गाय भागती है और जब वह करीब आती है तो लोग गाय का पैर पकड़ लेते हैं। इस तरह कुछ गायें आदमी की तरफ दौड़ती हैं तो कुछ डरकर भाग जाती हैं। इसे गाय बजाना कहते हैं। शाम को कई लोग मड़ई आदि जाते हैं जहां वे एकत्र होते हैं और गोंड, भारिया और अहीर मिलकर शैला नृत्य करते हैं। शैला का नृत्य दो दिनों तक चलता है। वे अपने–अपने घरों में यह पूजा करते हैं। रात में गांव के सभी लोग गांव के देवता मुठवा बाबा

के स्थान पर एकत्र होते हैं और छावर के साथ नाचते–गाते हैं। इस नृत्य को गैया जगाना कहते हैं। उसके बाद सुबह महिलाएं गोवर्धन पूजा करती हैं।

खिरका पूजा

भारिया लोग दिवाली के तीसरे दिन खिरका देव की पूजा करते हैं। इस दिन नारियल, खारिक, दूध, केसर और गाय बांधने वाले गिरमा से पूजा की जाती है। इस पूजा में गाय और बैल को लाल, पीले और हरे रंग से सजाया जाता है। उनके सींगों पर रंग लगाया जाता है। इस पूजा में दोपहर में खिरका का खेल खेला जाता है यानी गाय और बैल को गोल घेरे में घुमाया जाता है। इस दिन पुरुष शैला नृत्य करते हैं।

होली

यह फाल्गुन शुक्ल पक्ष पूर्णिमा को मनाई जाती है। गांव के बाहर होली जलाने की बजाय किसी अरंडी के पेड़ या टहनी को काटकर गाड़ दिया जाता है। होली के दिन लोग हर घर से लकड़ियां मांगते हैं और जंगल से काटकर लाते हैं। फिर गांव के भुमका और मुकद्दम कुछ लोगों के साथ मिलकर होली की पूजा करते हैं और आग जलाते हैं। दूसरे दिन एक–दूसरे पर रंग और गुलाल डाला जाता है। दोपहर में दाल, चावल, पूरी, पापड़, बड़ा और भजिया खाते हैं। शाम को लोग ढोल बजाकर गीत गाते हैं। भारिया जनजाति में लड़के फागुन महीने में महाशिवरात्रि के एक दिन बाद हर घर से लकड़ियां इकट्ठा करते हैं। भारियों में दो बार होली जलाने की परंपरा है। एक होली को वे कुंवारी होली कहते हैं। इस होली को केवल अविवाहित लड़के ही जला सकते हैं। दूसरी होली को बिहाटी होली कहते हैं। इसे विवाहित लोग जलाते हैं। होली जलने के बाद लड़के चने और गेहूं का होला मांगते हैं। गांव के भुमका खांडेराय बाबा की पूजा करते हैं और होली की आग में नंगे पैर भी चलते हैं। दूसरे लोग भी यही करते हैं। होली के कुछ दिनों बाद तक भारिया लोग ढोलकी, मृदंग, झांझ आदि के साथ दिन–रात फाग गाते हैं।

निष्कर्ष

महाद्वीपों के दुर्गम क्षेत्रों में ऐसे मानव समूह हैं, जो अपने लोक रीति–रिवाजों और त्योहारों को सामाजिक रूप से कायम रखे हुए हैं पातालकोट की भारिया जनजाति अपने नृत्य और लोकगीतों के लिए विख्यात है, जिसमें उनकी सांस्कृतिक विविधता पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर होती है ढोलक और नगाड़ा भारियों के बीच सबसे महत्वपूर्ण वाद्य यंत्र हैं इसके अलावा भारिया बांसुरी, मृदंग, झांझ का प्रयोग करते हैं भारिया जनजाति के त्योहार प्रकृति को समर्पित हैं भारिया खुद को हिंदू कहते हैं वे कई हिंदू देवी–देवताओं की पूजा करते हैं और कुछ हिंदू त्योहार भी मनाते हैं भारिया जनजाति हर माह आने वाले त्योहारों को मनाने के लिए हमेशा उत्साहित रहती है हालांकि भारिया जनजाति की धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा अपने आप में अलग है और इनमें त्योहारों का बहुत महत्व है जो इनके पारंपरिक त्योहार हैं।

संदर्भ सूची

1. त्रिपाठी ए.पी. (2000) ''पातालकोट की त्रासदी'' आदित्य पब्लिशर्स, जोगेश्वरी माता कॉम्प्लेक्स, बीना।
2. आर साहनी, एस.के. नंदी. (2013) भारत में विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूहरू एक अवलोकन. जर्नल ऑफ़ द एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ़ इंडिया. 62(2): 851–865.
3. खातरकर गुलाब, 2022 विशेष पिछड़ी भारिया जनजाति का सामाजिक जनजीवन, ब्लूरोज पब्लिशर, नॉएडा (उ–प्र–)।
4. पातालकोट भारिया विकास अभिकरण तामिया, जिला–छिन्दवाडा–सामान्य परिचय।
5. आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय इकाई बिलासपुर (छ.ग.)।
6. पातालकोट, इण्डिया: https://en.wikipedia.org/wiki/Patalkot,_India, अवलोकन दिनॉक 15/10/2023।
7. Population Finder 2011: https://censusindia.gov.in/census.website/data/population-finder, Last seen 15/10/2023.

****